पाठ - 18
रसूल ﷺ का जुहद (त्याग)

الدرس الثامن عشر - هندي
زهده ﷺ

वास्तविक अर्थों में ज़ाहिद उसे कहा जा सकता है जिसके पास असबाब मौजूद हों लेकिन उसने इससे अपने को बचाकर रखा और इससे बे रग़बत होकर इसे छोड़ दिया। हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया के सबसे बड़े ज़ाहिद इन्सान थे और दुनिया में बहुत ही कम रग़बत रखते और ज़रूरत की मात्रा पर भरोसा किया करते थे। और तंग दस्ती के जीवन को वरीयता देते, यद्यपि दुनिया आपके सामने थी और आप अल्लाह की निगाह में सबसे सम्मानित इन्सान थे। यदि आप चाहते तो अल्लाह तआला आपकी इच्छानुसार माल व नेमत प्रदान करता।

इमाम इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर में खैसमा के हवाले से ज़िक्र किया है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गयाः ''यदि आप चाहें तो हम आपको इस ज़मीन के ख़जाने और कुन्जियां प्रदान कर दें जिसे हमने आप से पहले किसी नबी को प्रदान नहीं किया और आपके बाद किसी को नहीं देंगे और इसकी वजह से अल्लाह के निकट आपके मक़ाम व दर्जा में कोई कमी नहीं होगी। आपने फ़रमायाः ''इन सभी चीज़ों को मेरी आखिरत की ज़िन्दगी के लिए जमा करके रखो।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सांसारिक जीवन बड़ा ही आष्चर्य जनक है। अबू ज़र रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं नबी अकरम के साथ मदीना के पहाड़ी इलाक़े में चल रहा था कि हमने उहुद पहाड़ को सामने पाया आपने इर्शाद फ़रमायाः मुझे इस बात से खुशी नहीं होगी कि मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना हो और मेरे पास इनमें से एक दीनार के रहते हुए तीन दिन गुज़र जाएं, सिवाए उसके जिसे मैंने दीनी मक़सद के तहत जमा कर रखा हो, या यह कि मैं अल्लाह के बन्दों के ऊपर दाएं बाएं और पीछे से खर्च कर दूं।

आप कहा करते थेः ''मुझे इस दुनिया से क्या मतलब, मैं इस दुनिया में उस सवार की तरह से हूं जिसने किसी पेड़ के नीचे साया हासिल किया और फिर उसे छोड़ कर आगे चल पड़ा।

आपका खाना और लिबास : जहां तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खाने की बात है तो एक महीना, दो महीने और तीन महीने गुज़र जाते थे और आपके घर में आग रौशन नहीं होती थी और आप का खाना खजूर और पानी हुआ करता था किसी दिन आप भूख की शिद्दत से निढाल हो जाया करते थे लेकिन आपको पेट भरने के लिए कुछ नहीं मिलता था आप की ज़्यादा तर रोटियां जौ की हुआ करती थीं और आपके बारे में मन्कूल है कि आपने बारीक आटे की रोटी कभी नहीं खायी बल्कि आपके सेवक अनस रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि दोपहर या रात के खाने में कभी गोश्त और रोटी एक साथ नहीं होते या यह कि मेहमान आए हों आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिबास दूसरी चीज़ों की तरह मामूली ही होते थे। सहाबा किराम ने लिबास में आपके ज़ुहुद और तकल्लुफ न होने की गवाही दी है जबकि आप क़ीमती से क़ीमती कपड़ा बनवा सकते थे। एक सहाबी आप की पोशाक की खूबी बयान करते हुए कहते हैं ''मैं रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास किसी मसले की बाबत बातचीत करने के लिए आया तो देखा कि आप बैठे हुए थे और आपके जिस्म पर मोटे सूती कपड़े का इज़ार पड़ा हुआ था।

अबू बुरदह रजियल्लाहु अन्हु आइशा रजियल्लाहु अन्हाकी सेवा में हाज़िर हुए तो उन्होंने एक पेवन्द लगा हुआ कपड़ा और मोटा इज़ार निकाला और कहाः ''रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हीं दो कपड़ों में वफ़ात पायी। अनस रजिव बयान करते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ चल रहा था और आपके जिस्म पर एक मोटी धारी वाली नजरानी चादर पड़ी हुई थी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी मौत के समय दिरहम, दीनार, गुलाम या लौंडी या कोई दूसरी चीज़ नहीं छोड़ी सिवाए सफ़ेद खच्चर, हथियार और ज़मीन के जिसे सदक़ा कर दिया था। आइशा रजियल्लाहु अन्हाबयान करती हैं ''जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्तिक़ाल हुआ उस समय मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे जिन्दा इन्सान खाता है सिवाए थोड़े से जौ के। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जब वफ़ात हुई तो आपकी ज़िरह एक यहूदी के यहां कुछ जौ के बदले गिरवी रखी हुई थी।